विजयी ... और अब भी चैंज़्पियन!

बाइबल पाठ #30

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमशः)।

ड. मंगलवार: "प्रश्नों का बड़ा दिन" (क्रमशः)।

3. एक के बाद एक प्रश्न: (क्रमशः)।

ख. सदूकी पुनरुत्थान के विषय पर पूछते हैं (मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-39)।

ग. एक व्यवस्थापक सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में पूछता है (मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 20:40)।

घ. यीशु "मसीह" के विषय में पूछता है (मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37; लूका. 20:41-44)।

4. ग्रन्थियों और फरीसियों की यीशु द्वारा भर्त्सना (मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47)।

परिचय

आप हत्यारों-लुटेरों से घिरे हुए हैं। उनमें से एक तेजी से आगे बढ़ता है, उसके होंठों पर शैतानी मुस्कान है। आपकी जान पर बनी हुई है। आप किसी न किसी तरह उसे पराजित करते हैं, परन्तु इससे पहले कि आप सांस ले पाएं, उसकी जगह एक और लुटेरा आ जाता है। बार-बार यही होता है। हांफते हुए, आप हैरान हो जाते हैं, "ये हमलावर खत्म भी होंगे या नहीं?" इस कल्पित दृश्य तथा यीशु की सेवकाई के अन्तिम सप्ताह वाले मंगलवार की घटनाओं में समानताएं हैं। अपने शत्रुओं से घिरे हुए, मसीह पर लगातार हमले हो रहे हैं। वह हमलावरों के एक समूह को पीछे करता ही था कि दूसरा उसे आ घेरता। वे यीशु पर घूंसों या तलवारों से नहीं, बल्कि शब्दों से वार करते थे, परन्तु उनके वार बड़े ही खतरनाक थे।

पिछले पाठ में हमने प्रभु के अधिकार को चुनौती मिलते देखा था। हमने कर देने के प्रश्न पर उसका उत्तर भी सुना था। शब्दों की गोलीबारी तब तक होती रही, जब तक यीशु ने स्वयं एक प्रश्न नहीं पूछा, जिसका कोई उत्तर नहीं दे पाया। मसीह ने वह प्रश्न एक से

एक खतरनाक ताने सुनने के बाद किया। जब कोई बॉक्सिंग चैम्पियन मैच जीत जाता है तो रैफरी बॉक्सर के दस्ताने पहने हाथ उठाकर चिल्लाता है, ''जीत गया ... और चैम्पियन हो गया!'' अपने शत्रुओं के साथ शब्दों की जंग में, यीशु ''जीत गया ... और अब भी चैम्पियन है!'' कहा गया।

पुनरुत्थान का विवाद
(मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-39)

प्रश्न

फरीसियों और हेरोदेसियों से मसीह के प्रश्न पूछने के बाद (मत्ती 22:15-22), ''कुछ सदूकी ... यीशु के पास आए'' (मरकुस 12:18क)। इनके बारे में प्रसिद्ध था कि वे ''कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं'' (मरकुस 12:18क)। सदूकी लोग स्वर्गदूतों और पुनरुत्थान समेत आत्मिक जगत की हर बात नकारते थे (देखें प्रेरितों 23:8)। इन संदेहवादी लोगों ने यीशु के ''पास आकर उस से पूछा'' (मरकुस 12:18ख)।

सदूकी अपने शत्रुओं अर्थात फरीसियों को मसीह द्वारा घबराहट में डाले देखकर प्रसन्न हुए थे। परन्तु उन्हें लगा कि जो प्रश्न *उन्होंने* पूछा था, वह उसका उत्तर नहीं दे पाएगा। अर्थात उसका उत्तर कोई भी नहीं दे सकता। उन्होंने पुनरुत्थान के विषय में फरीसियों के साथ झगड़ों में इसे इस्तेमाल किया हो सकता है।[1] यह प्रश्न एक काल्पनिक मामले में उठाया गया था:

> हे गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना संतान मर जाए, और उस की पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे: सात भाई थे। पहिला भाई ब्याह करके बिना संतान मर गया। तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और बिना संतान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी। और सातों से संतान न हुई: सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी (मरकुस 12:19-23)।

इस उदाहरण और प्रश्न को समझने के लिए आपको उस नियम के बारे में कुछ जानना पड़ेगा, जिस पर यह आधारित था। (''विधवा भाभी से विवाह का नियम'' के नाम से प्रसिद्ध) यह नियम व्यवस्थाविवरण 25:5-10 में मिलता है।[2] यदि कोई विवाहित पुरुष मर जाए और उसका कोई वारिस न हो, तो भाई (या निकटतम रिश्तेदार) पर उसकी विधवा से विवाह करके उसके लिए संतान पैदा करने की ज़िम्मेदारी होती थी। यदि उस विधवा से कोई संतान उत्पन्न होती, तो वह मरे हुए भाई की कानूनी वारिस मानी जाती थी। इस नियम का उद्देश्य परिवारों को बनाए रखना और यह सुनिश्चित करने में सहायता करना था कि

भूमि और सम्पत्ति परिवार में ही रहे।

हम नहीं जानते कि इस नियम को मसीह के समय कठोरता से माना जाता था या नहीं,[3] पर था यह मूसा की व्यवस्था का ही भाग। सदूकियों द्वारा बताई गई ये बातें व्यवहार में तो नहीं होती थीं पर, ऐसा सम्भव था। यह पूछकर कि ''वह उनमें से किसकी पत्नी होगी?'' वे बनावटी हंसी हंसे होंगे। उन्होंने यह अनुमान लगाया था कि यदि पुनरुत्थान है, तो जैसी विवाह की पहेली उन्होंने डाली थी, उसे सुलझाना असम्भव होगा।

उत्तर

सदूकियों की पहेली से फरीसी अवश्य बाधा में पड़ गए होंगे, परन्तु यीशु नहीं। उसने उत्तर दिया, ''तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो'' (मत्ती 22:29)। दो विषय, जिन पर सदूकियों का अधिकार होना चाहिए था, वे परमेश्वर और उसका वचन थे। यानी मसीह ने उन्हें बताया कि ''तुम दोनों से अनजान हो!''[4]

उनकी अज्ञानता उन झूठे दावों में स्पष्ट करती थी, जिन पर आधारित उनका तर्क था। उनकी झूठी मान्यताओं में एक यह थी कि कब्र के बाद भी जीवन वैसे ही है, जैसे पृथ्वी पर चलता है और चलना चाहिए। यीशु ने उन्हें बताया कि ऐसा बिल्कुल नहीं है:

> इस युग की संतानों में तो ब्याह-शादी होती है। पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे, कि उस युग को और मरे हुओं में से जी उठना प्राप्त करें, उन में ब्याह-शादी न होगी। वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और जी उठने की संतान होने से परमेश्वर की भी संतान होंगे (लूका 20:34-36)।[5]

मृत्यु विवाह के बंधनों को खत्म कर देती है (रोमियों 7:2)। इसके अलावा हम आत्मिक देहों में जी उठेंगे, न कि शारीरिक देहों में (1 कुरिन्थियों 15:42-44); शारीरिक लालसाएं पीछे छूट जाएंगी।[6]

सदूकियों की अज्ञानता उनकी दूसरी गलत मान्यता में दिखाई दी कि लोगों में अविनाशी आत्मा नहीं होती। उनका विश्वास था कि ''मुर्दे व्यक्ति का अस्तित्व नहीं रहता।''[7] इस मान्यता के पीछे की गलती को सामने लाने के लिए, यीशु ने कहा:

> मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर ने उस से कहा, मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं? परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन जीवतों का परमेश्वर है (मरकुस 12:26, 27क)।

यह उद्धरण निर्गमन 3:6 से लिया गया है (निर्गमन पुराने नियम की पांच पुस्तकों में

से एक थी, जिसे सदूकी भी मानते थे।[8]) उस पद में यहोवा ने कहा था, ''*मैं* तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं।'' अब्राहम, इसहाक और याकूब को निर्गमन 3:6 की बात कहने के समय मरे हुए सैकड़ों वर्ष हो गए थे। सदूकियों के अनुसार, ''मुर्दा व्यक्ति ... शून्यता पर ही समाप्त हो जाता है।''[9] यदि उनकी बात सही थी, तो परमेश्वर ने वास्तव में कहा था कि ''मैं *शून्य* का परमेश्वर हूं।''

यीशु के कहने का अर्थ था कि परमेश्वर ने यह नहीं कहा होगा कि ''मैं उनका परमेश्वर हूं जिनका अस्तित्व ही नहीं है।'' उसके तर्क को इस तर्क से समझाया जा सकता है:[10]

- मुख्य तर्क: परमेश्वर *जीवित* लोगों का परमेश्वर है, मरे हुए लोगों का नहीं।
- लघु तर्क: परमेश्वर ने कहा, ''*मैं* अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर *हूं* [वर्तमान काल[11]]''–उनके मर जाने के कई साल बाद।
- सारांश: इसलिए, अब्राहम, इसहाक और याकूब मर जाने के बावजूद अभी भी *जीवित* थे।

ध्यान दें कि मसीह ने पुनरुत्थान का प्रश्न प्रत्यक्ष रूप से न लेकर परोक्ष रूप से लिया। वह सदूकियों के पुनरुत्थान की ठुकराने की जड़ तक गया: वे पुनरुत्थान पर इसलिए विश्वास नहीं करते थे, क्योंकि वे यह विश्वास नहीं करते थे कि मुर्दे अभी भी जीवित हैं। यीशु ने साबित कर दिया कि उनका तर्क गलत था। उसने यह निष्कर्ष निकालते हुए कि ''तुम *बड़ी* भूल में पड़े हो'' (मरकुस 12:27ख) अवश्य अपना सिर हिलाया होगा।

''यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए'' (मत्ती 22:33)। सदूकियों के इतने जटिल प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था। यहां तक कि सुनने वाले शास्त्री भी प्रभावित हो गए। कइयों ने कहा कि ''हे गुरु, तू ने अच्छा कहा'' (लूका 20:39; मरकुस 12:32 भी देखें)। फरीसी अवश्य उसकी बातों को लिख रहे होंगे। सदूकियों ने इस चालाकी भरे प्रश्न को दोबारा उनसे नहीं पूछा!

आज्ञा पर विवाद
(मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 20:40)

सदूकी चर्चा से बाहर हो गए थे, परन्तु फरीसी हार मानने को तैयार नहीं थे। जब उन्होंने ''सुना, कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए'' (मत्ती 22:34)। जल्दबाजी में बुलाई गई सभा के बाद, उन्होंने एक व्यवस्थापक को अपना मुखिया बना लिया (मत्ती 22:35),[12] जो पवित्र शास्त्र का अच्छा जानकार था। इससे पहले उन्होंने नये भर्ती किए गए जवानों को भेजा था;[13] पर इस बार उन्होंने एक मंझे हुए व्यक्ति को भेजा।

फरीसियों द्वारा मसीह को घेर लेने पर,[14] इस व्यवस्थापक ने ''उस से पूछा। हे गुरु;

व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?'' (मत्ती 22:35, 36)। यहूदी शिक्षकों में, ''किसी और प्रश्न पर इतनी कड़वाहट भरा विवाद नहीं था।''[15] रब्बियों ने मूसा की व्यवस्था में 365 आज्ञाओं को नकारात्मक और 248 आज्ञाओं को सकारात्मक माना था। यह मानकर कि सभी 613 आज्ञाओं को मानना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होगा, उन्होंने उन्हें ''भारी'' (अधिक महत्वपूर्ण) और ''हल्की'' (कम महत्वपूर्ण) के रूप में वर्गीकृत किया था। उनका सबसे तनावपूर्ण तर्क ''सबसे भारी'' (सबसे महत्वपूर्ण) आज्ञा के विषय में था।

इससे पहले, एक और व्यवस्थापक जिसने मसीह से प्रश्न पूछे थे, वह इस बात से सहमत हो गया था कि व्यवस्था को व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18 से संक्षिप्त किया जा सकता था कि परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम रख (लूका 10:25–28)। यीशु ने इस अवसर पर उन्हीं वचनों को दोहराया:[16]

> सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।[17] जो दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना:[18] इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं (मरकुस 12:29–31)।

बहुत से यहूदी शिक्षकों का विश्वास था कि व्यवस्थाविवरण 6:5 दस आज्ञाओं में से पहली चार को और लैव्यव्यवस्था 19:18 अन्तिम छह आज्ञाओं को संक्षिप्त कर देती है।[19] वे तर्क देते थे कि यदि कोई व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18 को मान ले तो उसने दस आज्ञाओं को पूरा कर दिया और यदि कोई दस की दस आज्ञाओं को मान ले तो उसने सारी व्यवस्था को पूरा कर लिया।

फरीसी स्पष्टतया इस बात से अनजान थे कि उनके प्रतिनिधि मसीह के पहले दिए गए उत्तरों से प्रभावित हो चुके थे (मरकुस 12:28)।[20] अब वे प्रभु के ताज़ा उत्तर से सहमत[21] हो गए:

> हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। और उससे सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है (मरकुस 12:32, 33)।

यीशु ने इस शास्त्री में मन की शुद्धता और निष्कपटता देखी, जो अधिकतर फरीसियों में नहीं मिलती थी। उसने उससे कहा, ''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' (मरकुस 12:34क)। क्या मसीह द्वारा अपना उपदेश जारी रखने पर उस व्यवस्थापक का मन खुला रहा? पिन्तेकुस्त के दिन, क्या वह ''दूर नहीं'' की स्थिति से हटकर राज्य/कलीसिया में आ गया (प्रेरितों 2:38, 41, 47)? हम नहीं जानते, पर उसे अवसर अवश्य मिला था।

सबसे बड़ी आज्ञा वाला प्रश्न यीशु द्वारा सार्वजनिक रूप से पूछा गया, अन्तिम प्रश्न था। मरकुस ने लिखा है, ''किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ'' (मरकुस 12:34ख; देखें मत्ती 22:46)। लूका ने भी लिखा है, ''और उन्हें फिर उस से कुछ और पूछने का हियाव न हुआ'' (लूका 20:40)। एक बात तो यह थी कि उसके शत्रु बार-बार अपमानित होकर थक चुके थे। एक और बात यह थी कि प्रश्न और उत्तरों का युद्ध उनकी सोच के विपरीत प्रभाव डाल रहा था: लोगों की नज़र में बदनाम होने के बजाय यीशु अपने उत्तरों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था (मत्ती 22:33; देखें मरकुस 12:37)।

मसीहा से सम्बन्धित झगड़ा
(मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37; लूका 20:41-44)

मसीह के शत्रु प्रश्न पूछ-पूछकर थक चुके थे, पर वह नहीं थका था। उसने फरीसियों की ओर मुंह किया, जो अभी-भी इकट्ठे हुए थे (मत्ती 22:41),[22] और उनसे पूछा ''मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? यह किस की संतान है?'' (मत्ती 22:42क)।

''मसीह'' शब्द सुनकर फरीसियों ने यीशु के बारे में वैसे विचार नहीं किया जैसे हम करते हैं, बल्कि सदियों पहले परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए गए मसीह के बारे में सोचा था। ऊपर से, यीशु के प्रश्न का उत्तर देना आसान लगता था। यहूदी विद्वानों में यह सहमति थी कि मसीहा (अर्थात ख्रिस्तुस) राजा दाऊद की संतान में से होगा (2 शमूएल 7:12, 13; भजन संहिता 89:3, 4; 132:11; यशायाह 9:7; 11:1, 2; यिर्मयाह 23:5)।[23] इसलिए उन्होंने उत्तर दिया, ''दाऊद की'' (मत्ती 22:42ख)। उनका उत्तर गलत नहीं था, पर अधूरा ज़रूर था। पवित्र शास्त्र इतना ही नहीं सिखाता था कि मसीहा दाऊद की संतान होगा, बल्कि इससे अधिक सिखाता था। फरीसियों को मसीहा के बारे में अपनी समझ बढ़ाने की आवश्यकता थी।

मसीह ने पहले प्रश्न के बाद एक और प्रश्न पूछ लिया: ''तो दाऊद आत्मा में होकर[24] उसे प्रभु क्यों कहता है? कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं'' (मत्ती 22:43, 44)। यह हवाला भजन संहिता 110:1 से लिया गया था, ''जिसे यहूदी लोग सामान्यतया मसीहा की प्रतिज्ञा के रूप में मानते थे।''[25] इस आयत में आया पहला ''प्रभु'' परमेश्वर पिता के लिए था।[26] यहूदियों का विश्वास था कि दूसरा ''प्रभु'' मसीहा था।

यीशु ने निष्कर्ष निकाला, ''भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा?'' (मत्ती 22:45)। मसीह ''दाऊद का पुत्र'' *था,* परन्तु वह इससे भी *अधिक* था। दाऊद का प्रभु होने के कारण, मसीह दाऊद से पहले था और दाऊद का सृष्टिकर्त्ता था। वर्षों बाद यीशु ने यूहन्ना को बताते हुए इस बहुआयामी अवधारणा को व्यक्त किया था, ''मैं दाऊद का मूल, *और* वंश ... हूं'' (प्रकाशितवाक्य 22:16)। फरीसियों ने यह समझा कि मसीहा *दाऊद* (शाही) का पुत्र था; जबकि उन्हें यह समझ होनी चाहिए थी कि वह *परमेश्वर* का पुत्र (ईश्वरीय) भी था।

यीशु के प्रश्न के ''उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका'' (मत्ती 22:46)। इसका

उत्तर देने के लिए उन्हें यह मानना आवश्यक था कि मसीहा के बारे में उनकी शिक्षा पूरी नहीं थी। मरकुस ने लिखा है, ''भीड़ के लोग [यीशु] की आनन्द से सुनते थे'' (मरकुस 12:37ख)। वे यीशु को उन्हें लज्जित करते देख आनन्दित हुए होंगे, जो समझते थे कि उन्हें पवित्र शास्त्र की अधिक समझ है (यूहन्ना 7:49 के व्यवहार पर ध्यान दें)।

कपट की घेराबन्दी
(मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47)

यीशु और उसके शत्रुओं में शब्दों का झगड़ा बढ़ने पर भीड़ इकट्ठी हो गई (देखें मरकुस 12:37ख)। इस झगड़े को खत्म करने से पहले, मसीह ने एक और काम करना था। यह सुखद तो नहीं होना था, पर इसे करना आवश्यक था।[27] उसके मुंह से फरीसियों पर नालिश निकली। यह गुट उसे कई वर्षों से तंग कर रहा था, पर हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि प्रभु का उद्देश्य केवल अपना क्रोध और गुस्सा निकालना ही था। कुछ सम्भावित कारण नीचे दिए गए हैं, जिनसे पता चलता है कि यीशु ने इतने कठोर शब्दों का इस्तेमाल क्यों किया:[28]

(1) बुराई को सामने लाना आवश्यक है। भजनकार ने लिखा है, ''हे यहोवा के प्रेमियो, बुराई से घृणा करो'' (भजन संहिता 97:10क; देखें आमोस 5:15)। मसीह ने पहले एक चाबुक से मन्दिर को शुद्ध किया था; जबकि अब इसे शब्दों से शुद्ध किया।

(2) फरीसियों से प्रभावित होने वाले लोगों को यह पता चलना आवश्यक था कि वे वास्तव में क्या थे। इसलिए उसने सामान्य रूप से आम लोगों को (मत्ती 23:1) और विशेष रूप से अपने चेलों को सम्बोधित किया (मत्ती 23:1; लूका 20:45)।

(3) फरीसियों के लिए मन फिराना आवश्यक था। उसने फरीसियों को भी सम्बोधित किया (मत्ती 23:13), शायद इस आशा से कि उनमें से किसी न किसी को अवश्य होश आ जाएगा।[29] पवित्र शास्त्र के अनुसार, ''बुद्धिमान को शिक्षा दे, तो वह तुझ से प्रेम रखेगा'' (नीतिवचन 9:8ख)। इससे पहले, यीशु को एक फरीसी मिला था, जो ''परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' था (मरकुस 12:34); शायद शुद्ध मन वाले और फरीसी भी हों।

बहुत से लेखक मत्ती 23 अध्याय में मसीह के ''हाय'' देने को आंखों में चमक और घायल करने वाली उंगली के साथ दिखाते हैं, परन्तु क्या आपको उसके संदेश के सारांश की पीड़ा का अहसास हो सकता है? ''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम ... '' (आयतें 37-39)। एक लेखक ने सुझाव दिया है कि मत्ती 23...

> ... तरस की एक पुकार है; और यदि हम इसके कठोरतम वाक्यों में तरस की वाणी के कम्पन को नहीं पकड़ते तो इसकी आत्मा और उद्देश्य से चूक जाएंगे। सच्चाई यह है कि अपने हठी शत्रुओं को उनकी गलती दिखाते और इस आशा में कि वे मन फिरा सकते हैं इसके आवश्यक प्रतिफल बताते हुए उद्धारकर्त्ता की अंतिम अपील है।[30]

मत्ती 23 अध्याय का अध्ययन हम बाद में विस्तार में करेंगे; अभी इस पर ध्यान देते हैं कि इस अध्याय में फरीसियों के *कपट* पर ज़ोर दिया गया है। 23:13-15, 23, 25, 27-29 देखें।

प्रभु की दृष्टि में, कुछ पाप कपटी होने के पाप से भी बड़े थे। ''कपट'' यूनानी शब्द *hupokrites* का हिन्दी अनुवाद है[31] (अंग्रेज़ी में इसका लिप्यंतरण हिपोक्राइट ही है), जो यूनानियों द्वारा रंगमंच के कलाकार के लिए इस्तेमाल होता था। इसका अर्थ वह बनने का अभिनय करना है, जो वास्तव में कोई न हो। ''अभिनय'' शब्द पर ध्यान दें। कई बार, हम सब ''कोई बात कहते हैं और उसे करते नहीं''-परन्तु अपनी बात पर खरा न उतरना वास्तव में किसी भी प्रकार कपट नहीं है। कपटी व्यक्ति वह नहीं होता, जो जानते हुए न कर पाए, क्योंकि इस तरह तो हम सभी करते हैं (रोमियों 3:23)। कपटी तो वह है, जो जान-बूझकर दूसरों को अपनी आत्मिक स्थिति के बारे में गुमराह करने की कोशिश करता है। कपटपूर्ण जीवन शैली कपट भरे मन से ही बनती है। ऐसा होने पर, हम कैसे जान सकते हैं कि कोई व्यक्ति कपट कर रहा है या उसमें भी वही कमज़ोरी है, जो हम सब में है? यह हम नहीं जान सकते पर, यीशु जान सकता था, क्योंकि वह लोगों के मनों को जानता था (यूहन्ना 2:25); परन्तु आप और मैं दूसरों के मनों की बात नहीं जान सकते। इसलिए हमें किसी को ''कपटी'' नाम देने से हिचकिचाना चाहिए। मैं केवल अपने मन की बात ही जान सकता हूं और आप भी केवल अपने मन की बात ही जान सकते हैं (1 कुरिन्थियों 2:11)। इसलिए फरीसियों के कपट के बारे में अध्ययन करते हुए, हम यह बात दूसरों पर लागू न करें। इसके बजाय हम में से हर एक अपने-अपने मन को यह देखने के लिए जांचे कि कपट का कोई कण हमारे अन्दर तो नहीं रह गया।

फरीसियों के कपट की निन्दा करते हुए मसीह ने कहा था कि वे ''अधिक दण्ड पाएंगे'' (मत्ती 23:14; मरकुस 12:40) और उन्हें ''नरक के पुत्र'' कहा (मत्ती 23:15)। इस संदेश के अन्त में, उसने कहा, ''हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे?'' (मत्ती 23:33)।[32] यदि चेलों को अभी भी फरीसियों के ठोकर खाने की चिन्ता थी (मत्ती 15:12), तो यीशु के ''हायों'' से उन्हें अधिक परेशानी हुई होगी।

फिर, मैं कहता हूं कि हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि मसीह के शब्दों की कठोरता से यह संकेत मिलता है कि उसका उद्देश्य अपने शत्रुओं को डांटना ही था। यीशु की अन्तिम हाय (मत्ती 23:37-39) से ''करुणा दिखाने की इच्छा, बल्कि तड़प'' का पता चलता है।[33]

यह मसीह का अन्तिम और सार्वजनिक उपदेश हो सकता है; निश्चय ही यह अन्तिम उपदेशों में से एक था। ''यह संदेश आवश्यक था; पर यीशु जानता होगा कि यह विनाशकारी है। इसके बाद वह तरस की उम्मीद नहीं कर सकता था।'' उसके शत्रु युद्ध के मैदान को ''लहूलुहान'' और लताड़ा हुआ छोड़ गए हो सकते हैं, परन्तु उसे मारने का उनका इरादा और भी पक्का हो गया था।

सारांश

मसीह की सार्वजनकि सेवकाई समाप्त हो चुकी थी, परन्तु दिन अभी बाकी था। अगले पाठ में हम उन घटनाओं से भरे मंगलवार का अपना अध्ययन जारी रखेंगे। इस प्रस्तुति को समाप्त करते हुए, मैं फिर से यह ज़ोर देना चाहता हूं कि यीशु झगड़े के उस दिन से चलकर ''विजयी ... और आज भी चैम्पियन'' बन गया।

मेरी अक्सर यह इच्छा होती है कि काश मैं भी प्रभु की तरह प्रश्नों के उत्तर दे सकता[34]–काश मुझे भी पता होता कि कब क्या और कैसे कहना है, कब कोमलता से और कब कठोरता से उत्तर देना है। मुझ में यह गुण नहीं है और न ही कभी हो सकता है। फिर भी, यह जानकर तसल्ली मिलती है कि यदि मैं उसका वफ़ादार रहूं, तो मैं भी अन्त में विजयी होऊंगा (प्रकाशितवाक्य 15:2)!

नोट्स

आज, बहुत से लोग पुनरुत्थान की वास्तविकता से वैसे ही इनकार करते हैं, जैसे यीशु के समय के सदूकी करते थे। पुनरुत्थान पर प्रवचन के लिए परिचय के रूप में आप सदूकियों के चालाकी भरे प्रश्न की कहानी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

''बड़ी'' और ''दूसरी'' आज्ञाओं पर यीशु की बात में सिखाने की कई सम्भावनाएं हैं। आपको ''सबसे प्रेम करने वाला परमेश्वर'' पाठ में बड़ी आज्ञा पर एक प्रवचन मिलेगा। *गैटिंग सीरियस अबाउट लव* नामक अपनी पुस्तक में मैंने मत्ती 22:34-40 पर आधारित तीन प्रवचन शामिल किए हैं: ''प्रेम की प्राथमिकताएं,'' ''सैल्फलव बनाम सैल्फ़शनेस'' और ''लव पुट टू द टैस्ट।''[35] अपने प्रश्न पूछने वालों से ''तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं'' (मरकुस 12:34), मसीह के शब्दों से एक और ढंग का सुझाव मिलता है।

अपने शत्रुओं को यीशु के प्रश्न से मसीह के ईश्वरीय होने पर प्रवचन का परिचय मिल सकता है: ''वह किसका पुत्र है?'' यही घटना ''मसीह का विरोधाभास'' पर प्रचार करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। मैक्गर्वे ने लिखा है:

> यह भजन [110] मसीहा के दाऊद का प्रभु होने की बात करता है, और दूसरी आयतें उसे दाऊद का पुत्र कहती हैं। सो पवित्र शास्त्र भी मसीह को विजयी परन्तु दुख सहने वाला, ईश्वरीय परन्तु मनुष्य, मरने वाला परन्तु जीवित के रूप में, अपराधी परन्तु न्याय करने वाले के रूप में दिखाता है। ... लगता है कि यहूदी हाकिमों ने मसीह के स्वभाव को उसके जीवन से या पवित्र शास्त्र में केवल एक ही पक्ष को समझा, और इसी कारण उन्होंने ठोकर खाई।[36]

आज भी बहुत से लोगों के मन में यीशु की अवधारणा एकतरफ़ा या अधूरी है।

मत्ती 23 तथा मरकुस तथा लूका में इससे सम्बन्धित दो संक्षिप्त पदों में प्रचार की सम्भावनाएं हैं। मत्ती 23 की आयतों को प्रवचनों के लिए स्प्रिंगबोर्ड के रूप में इस्तेमाल

किया जा सकता है। आयत 3 से आज्ञाकारिता की आवश्यकता पर सामान्य प्रवचन का परिचय दिया जा सकता है: ''... वे कहते तो हैं पर करते नहीं।'' आयत 8 पर प्रचार करने के बारे में क्या विचार है: ''तुम सब भाई हो?'' आयत 15 को ''व्यक्तिगत काम करने के कुछ खतरे'' पर वचन सुनो के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रवचनों पर मेरी पहली पुस्तक में, एक प्रवचन ''वाच आउट फ़ॉर द कैमल्स!''[37] आयत 24 पर आधारित था।

टिप्पणियां

[1]इस विषय पर सदूकियों और फरीसियों में चलते रहने वाले झगड़े के एक उदाहरण के लिए, देखें प्रेरितों 23:6-9. [2]मूसा ने लेवियों की व्यवस्था लिखी थी, परन्तु परम्परा इससे भी पुरानी थी (देखें उत्पत्ति 38:8)। लेवियों की व्यवस्था रूत की कहानी के दिलचस्प प्रसंग का आधार है (रूत 3:1-4:12)। [3]कार्टर ने इसे ''कभी न इस्तेमाल होने वाली व्यवस्था'' कहा (जॉन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* [नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1961], 260)। [4]पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ दो ऐसे विषय हैं, जिनसे अनजान रहने का आप या मैं साहस नहीं कर सकते! [5]कुछ लोग, जैसे कि मॉरमन, इस पद को नहीं समझ पाते और सिखाते हैं कि विवाह का बन्धन मृत्यु के बाद भी रहता है। [6]इसका अर्थ यह नहीं है कि इस जीवन में जिस परिवार से हम प्रेम करते थे, उसके सदस्यों से हमारा विशेष मोह नहीं होगा। इसका यह अर्थ है कि हमारा सम्बन्ध अलग होगा; हमारा बन्धन शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक होगा। [7]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे एण्ड फिलिप्प वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारनमी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 602. [8]लोगों के साथ अध्ययन करते हुए, आपको उसी अधिकार से आरम्भ करना चाहिए, जिसे वे मानते हैं। [9]वहीं। [10]तर्कवाक्यों की संक्षिप्त चर्चा के लिए *मसीह का जीवन, भाग 4* पुस्तक में ''मैं अन्धा था पर अब देखता हूं'' पाठ देखें।

[11]एक-एक शब्द के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का इनकार करने वाले कुछ लोग कहते हैं कि हमें डॉक्ट्रिन की बातें सिखाते समय विशेष शब्दों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपनी बात समझाने के लिए यीशु ने एक-एक शब्द के काल पर ज़ोर दिया। [12]मरकुस ने उसे शास्त्री कहा है (मरकुस 12:28)। वह सरकारी कानून में नहीं, बल्कि धार्मिक व्यवस्था का विशेषज्ञ था। [13]इस पुस्तक में ''क्या दिन है'' पाठ में इन लोगों पर चर्चा देखें। [14]इस विवरण की तुलना मत्ती 22:34, 41 से करें। यीशु और व्यवस्थापक के बीच चर्चा के समय वे ''इकट्ठे'' रहे। द लिविंग बाइबल में मत्ती 22:41 का अनुवाद है, ''फिर, फरीसियों से घिरे हुए, उसने उनसे एक प्रश्न पूछा ...।'' [15]एच. आई. हेस्टर, द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 193. [16]क्योंकि यीशु ने वास्तव में पहले इस प्रश्न का उत्तर दे दिया था, इसलिए आश्चर्य होता है कि यह प्रश्न फिर क्यों पूछा गया। शायद इसलिए पूछा गया कि यह प्रश्न विवादपूर्ण था और फरीसियों को आशा थी कि मसीह जो भी उत्तर दे, इससे लोगों में फूट पड़ जाएगी। परन्तु अधिक सम्भावना यही लगती है कि प्रश्न पूछने वाले पिछले अवसर के बारे में नहीं जानते थे, जो यरूशलेम के बाहर हुआ था। [17]मरकुस 12:29, 30 पर विस्तृत चर्चा के लिए इस पुस्तक में ''सबसे प्रेम करने वाला परमेश्वर'' प्रवचन देखें। [18]यीशु से यह नहीं पूछा गया था कि ''दूसरी'' आज्ञा क्या है। जहां मैं रहता हूं, वहां हम कहेंगे कि उसने वह ''मुफ़्त में दे दी।'' [19]''दूसरी आज्ञा'' के सम्बन्ध में नये नियम के लेखकों ने ऐसे ही तर्क का इस्तेमाल किया (देखें रोमियों 13:8-10; गलातियों 5:14; याकूब 2:8)। [20]मत्ती ने संकेत दिया कि वह व्यवस्थापक फरीसियों की ओर से भेजा गया था (मत्ती 22:34, 35), जबकि मरकुस ने यह प्रभाव दिया कि व्यवस्थापक का प्रश्न सहज और ईमानदारी वाला था (मरकुस 12:28)। दोनों विवरण विरोधाभासी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं: फरीसी जब समझ नहीं पा रहे थे कि क्या किया जाए, तो उनमें से एक (व्यवस्थापक) ने यीशु

के पास जाकर प्रश्न पूछने के लिए अपने आप को पेश किया होगा, जिसका उत्तर वह सुनना चाहता था। फरीसी उसकी निष्कपट रुचि के बारे में नहीं जानते होंगे।

[21]उसके उत्तर से उसके साथी फरीसी चौकस हो गए होंगे। [22]मत्ती के अनुसार, यीशु ने फरीसियों से यह प्रश्न पूछा। मरकुस 12:35 यह प्रभाव देता है कि यीशु ने वहां सुन रहे सब लोगों से यह प्रश्न पूछा था। लूका 20:40, 41 संकेत देता है कि उसने यह प्रश्न उनसे पूछा, जो उस से प्रश्न कर रहे थे। ये सभी वृत्तांत सही हैं: उसने सबको सुनाने के लिए प्रश्न किया, परन्तु विशेष तौर पर उसने उत्तर देने की चुनौती फरीसियों को दी (जो उस से प्रश्न पूछ रहे थे)। [23]यीशु ने मसीहा की यह शर्त पूरी की (मत्ती 1:1; रोमियों 1:3)। सुसमाचार के सभी वृत्तांतों में उसे ''दाऊद का पुत्र'' के रूप में दिखाया गया है (देखें मत्ती 12:23; 15:22; 20:30; 21:9, 15)। [24]इस प्रकार यीशु ने यह पुष्टि की कि भजन संहिता 110 दाऊद ने ही लिखा था और वह भी परमेश्वर की प्रेरणा से। [25]कार्टर, 263. यह पद एक बार पतरस द्वारा (प्रेरितों 2:34, 35), और इब्रानियों की पुस्तक के लेखक द्वारा बार-बार उद्धृत किया गया था (इब्रानियों 1:13; 5:6; 7:17, 21)। [26]भजन संहिता 110:1 में अंग्रेज़ी में पहला ''Lord'' के सभी अक्षर बड़े हैं (''LORD'')। ''LORD'' शब्द (सभी अक्षर बड़े) परमेश्वर के पवित्र नाम का संकेत देता है। मूल इब्रानी पवित्र शास्त्र (जिसमें कोई स्वर नहीं होता था), इस पवित्र नाम के लिए चार व्यंजनों (जिसे ''The Sacred Tetragrammaton,'' या ''चार पवित्र अक्षर'' के रूप में जाना जाता था): YHWH (यहवह)। परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेने के भय से, यहूदी लोग इस नाम का उच्चारण नहीं करते थे। समय बीतने पर, इसका सही उच्चारण अलोप हो गया। अन्त में जब व्यंजनों के साथ स्वर जोड़े गए तो किसी को पता नहीं था कि किस स्वर को जोड़ा जाए। बहुत से लोगों का विचार है कि यह नाम ''याहवेह'' पुकारा जाना चाहिए। कुछ अनुवादकों ने जान-बूझकर इसे ''प्रभु'' के लिए इब्रानी शब्द से स्वरों को जोड़कर ''Jehovah'' या यहोवाह बना दिया है। क्योंकि हम नहीं जानते कि इस नाम के शब्द जोड़ क्या हैं या इसे कैसे पुकारा जाना चाहिए, अंग्रेज़ी के बहुत से अनुवाद जिसमें न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल भी शामिल है, परमेश्वर के ''पवित्र नाम'' के लिए ''LORD'' शब्द लगा देते हैं। [27]समय-समय पर हर प्रचारक को सुधार की चुनौती का सामना करना पड़ता है (देखें 2 तीमुथियुस 4:1-5)। [28]एक चौथा सम्भावित तर्क ''फरीसियों के खमीर से चौकस रहो'' पाठ में दिया गया है। [29]सब पर यही ढंग नहीं अपनाया जा सकता। कुछ को सीधा संदेश देने की आवश्यकता होती है। [30]डेविड स्मिथ, *अवर लॉर्ड'स अर्थली लाइफ़* (न्यू यॉर्क: जी. एच. डौरन, 1926) 353; एच. आई. हेस्टर, हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट (लिबर्टी, मिजोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 194.

[31]*Hupokrites* एक मिश्रित शब्द है, जो ''न्याय'' के लिए (*krites;* अर्थात क्रिक-टेस) के साथ उपसर्ग *hupo* का मेल है, जिसका अर्थ ''अधीन'' या ''से'' हो सकता है। [32]मत्ती 3:7; 12:34; लूका 3:7 से इस पद की तुलना करें। [33]कार्टर, 265. [34]कई बार मैं उसी स्थिति में होता हूं, जिसमें यीशु था: यानी धार्मिक विरोधियों के बीच घिरा हुआ। एक व्यक्ति मुझ पर प्रश्न दागता है। जैसे ही मैं उत्तर देता हूं, मेरे उत्तर समझने से पहले ही, कोई और दूसरा प्रश्न पूछने के लिए तैयार रहता है। इन अवसरों से निकलकर मुझे विजयी या चैम्पियन जैसा महसूस *नहीं* हुआ। [35]डेविड रोपर, *गैटिंग सीरियस अबाउट लव* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 1992), 81-130. [36]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 605. [37]डेविड रोपर, *द डे क्राइस्ट केम (अगेन) एण्ड अदर सरमन्स* (डैलस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 161-74.